Hanuman Chalisa Lyrics In Hindi

दोहा:

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।

बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।

बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार।।

चोपाई:

रामायणा सागर जौ, पवनसुत कहावत।

महावीर जब नाम सुनै, मन में मोती धावत।।

हनुमान चालीसा, पढ़ो भक्तिपूर्वक।

दुख-तकलीफ दूर होवे, हों सबको सुख।।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।

जय कपीश तिहुँ जग उजागर।।

राम दूत अतुलित बल धामा।

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

महावीर विक्रम बजरंगी।

कुमति निवार सुमति के संगी।।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।

कानन कुंडल कुंचित केसा।।

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।

कांधे मूंज जनेऊ साजै।।

शंकर सुवन केसरी नंदन।

तेज प्रताप महा जग वंदन।।

राम रसायन तुम्हरे पासा।

सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन रामको पावै।

जनम-जनम के दुख मिटावै।।

अष्ट-सिद्धि नौ निधि के दाता।

असबरदीन जानकी माता।।

राम रघुकुल नायक पिया।

रामचन्द्र के परम सुखिया।।

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा।

राम मिलाई राज पद दीन्हा।।

तुम्हरो मंत्र विप्र हरि मुरारी।

असुरन के संग सुमिरनी सुखकारी।।

राम लक्ष्मण सीता संग लाई।

तुम्हरे नाम से सारा जग जाई।।

रघुबर के संजीवनी दीन्ही।

जीवन यथावत सजग कर दीन्ही।।

जोगी सखि पावन पुरान।

तुम्हारी महिमा सबसे महान।।

तुम्हरे गुण गावत सब कोई।

गुनगुनाए सच्चे भक्त भले सोई।।

जो सदा पढ़े हनुमान चालीसा।

उनके कष्ट मिटें, बढ़े खुशियाँ जीना।।

राम भक्त होके नाम लिया।

सुख-समृद्धि सबको मिलिया।।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।

जय कपीश तिहुँ जग उजागर।।

दोहा:

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।

जय कपीश तिहुँ जग उजागर।।